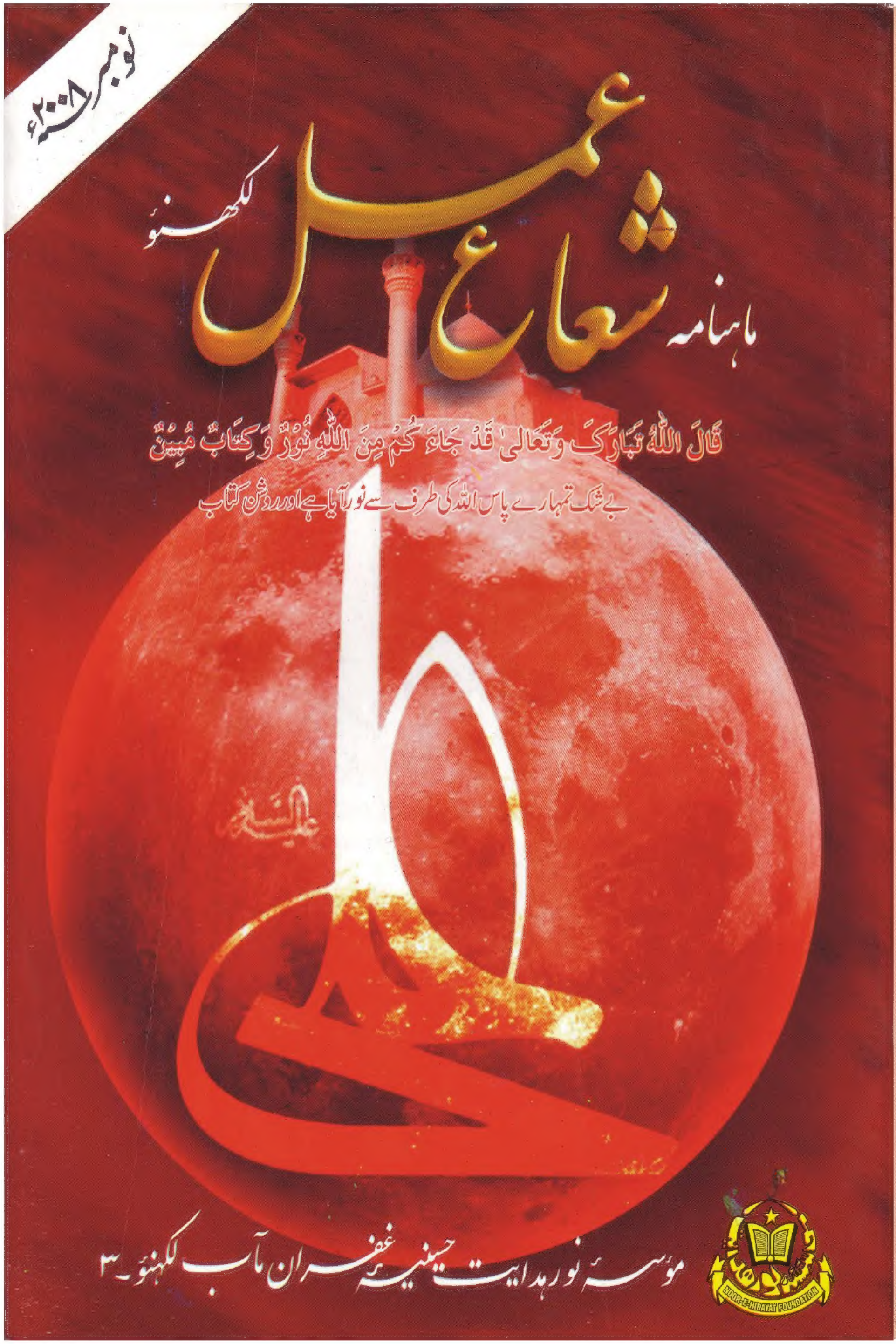

November-2008

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk, Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

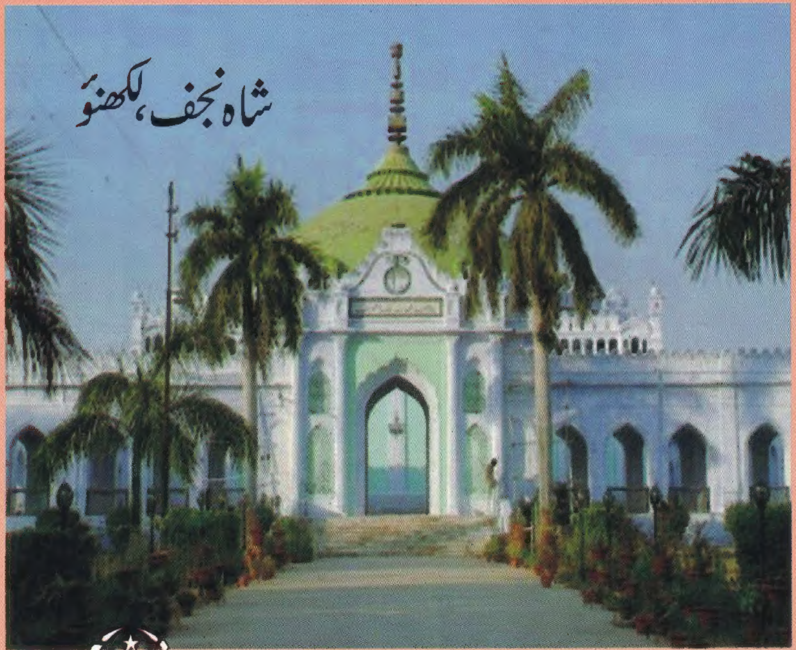

NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA, Phone : 2252230

वर्ष-5

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk. Dispatch Date: 2 & 6 of every month

अंक - 5

नवम्बर - 2008

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल
"लखनऊ"

संरक्षक
मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहब

सम्पादक
सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

सलाहकारी परिषद
प्रोफ़ेसर अल्लामा सै० अली मुहम्मद नक़वी, प्रोफ़ेसर सै० हुसैन कमालुद्दीन अकबर,
प्रोफ़ेसर सै० इमरान हैदर, मु० र० आबिद, सैय्यद समीउल हसन वसीम, तज़्हीब नगरौरी

वार्षिक - 200 रु मिलने का पता क़ीमत - 20 रु

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ - 3 (उ.प्र.) भारत। फोन न० 0522-2252230

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर-ए-हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै० मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़ जाएसी'।

मजलिसे इदारत

- तज़हीब नगरौरी
- सै० सुफ़यान अहमद नदवी
- मुहम्मद सरवर रिज़वी
- खुर्शीद अली रिज़वी
- तनवीर नगरौरी
- सै० कामिल रज़ा
- अदील महदी ज़ैदी

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10

WEBSITE:
www.noorehidayat.com

E_mail:
noorehidayat.@yahoo.com
noorehidayat.@gmail.com

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

नवम्बर 2008ई० / ज़ीक़ादा 1429हि०

न० मज़मून व लेखक	पेज
1— क्या ख़िलाफ़ते अलविया नाकामयाब रही? मलाजुल उलमा मौलाना सै० हसन साहब क़िब्ला	3
2- शबे शहादत सैय्यिदुल उलमा सैय्यद अली नक़ीरह० के ख़ुतबे	5
3- फ़ुरू—ए—दीन मौलाना सै० इब्ने हसन जारचवी साहब	10
4- कामयाबी का मेयार तज़हीब नगरौरी	12
5- मुख्य समाचार इदारा	15

ज़रे सालाना

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः
60 अमरीकी डालर

2- ख़लीजी मुमालिकः
50 अमरीकी डालर

3- एशिया, पाकिस्तानः
30 अमरीकी डालर

4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः
15 अमरीकी डालर

अक़्वाले मासूमीनअ०

☞ एक मुसलमान दूसरे के लिए आईना है। (रसूले अकरमस०)

☞ हक़ीक़ी मुसलमान वह है जिसके हाथ और ज़बान से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ हों। (रसूले अकरमस०)

☞ तंगदस्ती में मुब्तला हो तो सदक़ा देकर अल्लाह से तिजारत करो। (अमीरुल मोमिनीनअ०)

☞ इल्म का नतीजा हर उस काम से दूरी है जिसकी इन्तेहा शर्मिन्दगी हो। (अमीरुल मोमिनीनअ०)

☞ राहत व आराम में इल्म हासिल नहीं हो सकता है। (अमीरुल मोमिनीनअ०)

क्या ख़िलाफ़ते अलविया नाकामयाब रही?

मलाजुल उलमा मौलाना सै0 हसन नक़वी

मौलाए काएनात हज़रत अमीरुलमोमिनीन अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस्सलाम की ख़िलाफ़त के बारे में कुछ नासमझ, अन्जान, तास्सुब से भरे, बातिल की राह पर चलने वाले, हक़ से दूर, सिराते मुस्तक़ीम से अलग और बातिल का झण्डा लहराए हुए, इसकी क़सम खाये हुए हैं कि हक़ चाहे कितना ही ज़ाहिर होगा ईमान कितना ही रौशन हो, हिदायत का चिराग़ कितना ही रौशन हो और हक़ तक ले जाने वाला रास्ता कितना ही सीधा और साफ़ हो, लेकिन हम हमेशा हक़ से कतरा कर चलेंगे हक़ के चिराग़ को बातिल की कमज़ोर फूँकों से बुझा देंगे हक़ के चाँद पर मिट्टी डाल देंगे। ख़ुदा की क़सम हक़ कभी मिटाने से नहीं मिट सकता, आफ़ताबे दो आलम पर बग़ैर ख़ुदा की मर्ज़ी के गहन नहीं पहुँच सकता, सिराजे मुनीर ख़ामोश नहीं हो सकता, हिदायत का चिराग़ बुझ नहीं सकता, बातिल की भरपूर ताक़तें मिट जाएंगी, हुकूमतें तबाह हो जाएंगी, इक़्तेदार फ़ना हो जाएंगे, दौलतें ख़त्म हो जाएंगी, फ़ौजों की ज़्यादती ख़त्म हो जाएगी, यहाँ तक कि बातिल की आख़िरी सांसें लम्बी ख़ामोशी से बदल जाएंगी। और मिटाने वाले ख़ुद मिट जाएंगे और मिट गए लेकिन इमामत का चाँद रौशन रहा और यह तो अल्लाह का वादा भी था, ''और अल्लाह अपने नूर को पूरा कर के रहेगा चाहे काफिर उसे नापसन्द करें'' वह जिसे चाहे रखे जिसे चाहे फ़ना कर दे! अली[अ०] की हक़्क़ानियत की यही दलील है कि बातिल फ़ना हो गया मगर हक़ हमेशा की तरह आज भी बाक़ी है और इन्शाअल्लाह क़यामत तक क़ायम रहेगा।

कुछ नासमझ और मुतास्सिब लोग यह कहते हैं कि अमीरुलमोमिनीन[अ०] की ख़िलाफ़त नाकामयाब रही और जिन इस्लामी हुक्मरानों को ख़लीफ़ा कहा जाता है उनकी ख़िलाफ़तों के दौर भी (ही) कामयाब गुज़रे, लेकिन इन नासमझ लोगों को चाहिए कि वह तारीख़ को तास्सुब से दूर होकर और हक़ की तलाश के इरादे से पढ़ें तो उन पर ज़ाहिर हो जाएगा कि हक़ीक़त में किसकी ख़िलाफ़त कामयाब गुज़री? अब मेरे इन बयानों को ग़ौर से देखिये।

अरब में हुकूमत का पुराना निज़ाम

अरब में इस्लाम का सूरज निकलने से पहले शख़्सी सलतनत और हुकूमत का रवाज था, इक़्तेदार परस्ती हद से आगे बढ़ी हुई थी और यह हालत हो गई थी कि हर क़ौम और हर क़बीला इससे मुतास्सिर हुए बिना न रह सका था, हर शख़्स अपने क़बीले का हुक्मरान था और आम तौर पर शख़्सी इक़्तेदार माना जाता था।

अरब में जमहूरी निज़ाम

जनाब रिसालतमॉब[स०] ने अल्लाह की हुकूमत को क़ुबूल करने की दावत दी मगर आपकी वफ़ात के बाद ख़िलाफ़त के नये मुदब्बिरों ने मुल्की निज़ाम की सूरत बदल डाली ख़िलाफ़ते उला के वक़्त जमहूर या इज्माअ़ जो कुछ हुआ उसकी थोड़ी बहुत हैअत ज़रूर क़ायम हुई, मगर ढाई बरस के बाद फिर जमहूरी निज़ाम बदल कर शख़्सी हुकूमतों की तरह से और इज्माअ़ तोड़ कर शख़्सी इख़्तियार की बिना पर दूसरे ख़लीफ़ा को ख़लीफ़-ए-अव्वल ने मुक़र्रर किया दूसरी ख़िलाफ़त या दूसरी हुकूमत ने छः ख़ास लोगों पर इज्माअ़ के इनएक़ाद को महदूद व मख़सूस कर दिया, दूसरी ख़िलाफ़त ने अपनी बेतवज्जोही की बिना पर राय शुमारी (वोटिंग) की तरफ़ ध्यान न किया बल्कि उनके ज़माने में मरवान इब्ने हेकम के शख़्सी इख़्तियारात ने अ़वाम के आम और अच्छे माहौल को इक़्तेदार की गन्दी हवा से ख़राब कर

दिया और उनके ख़ुदग़रज़ मुल्की निज़ाम ने शख़्सी और जमहूरी दोनों सूरतों को बिगाड़ कर ग़लत बुनियादें अपनी ख़िलाफ़त में क़ायम की।

हज़रत अली[अ०] की हुकूमत के वक़्त मुल्क का हाल

बदअम्नी, पुरआशोबी और कैफ़ियत हंगामी का मुल्क पर पूरी कुव्वत से तसल्लुत था, इस्लामी मुल्कों में ग़दर मचा हुआ था कि अमीरुलमोमिनीन की ज़ाहिरी ख़िलाफ़त और तख़्तनशीनी वाक़े हुई। यह ग़दर आपकी तख़्त नशीनी की वजह से नहीं हुआ था बल्कि पाँच बरस पहले से मुमालिके महरूसा में मचा हुआ था इस ग़दर के ज़िम्मेदार अमीरुलमोमिनीन[अ०] नहीं थे, क्योंकि यह ग़दर हुकूमते सालिसा या ख़िलाफ़त सालिसा में मरवान के हाथों मुल्की निज़ाम के तबाह होने से हुआ था उनकी वज़ार के आख़ीर ज़माने में तो मुल्क के हर हर गोशे से आम तौर से ग़दर और फ़ितने व फ़साद की सदाएं आने लगी थीं, चारों तरफ़ से फ़ितने के तूफ़ान उठ रहे थे ख़िलाफ़त के तमाम मामले मरवान की नासमझी और नतीजे की फ़िक्र न होने की वजह से बर्बाद हो गए थे, आपकी ख़िलाफ़त के ज़ाहिरी ज़माने में ख़िलाफ़त के कई चाहने वाले थे, तलहा अगर कूफ़ा चाहते थे तो ज़ुबैर बसरा, अब्दुल्लाह इब्ने अबी सर्ज को मिस्र की तलाश थी तो मुआविया इब्ने अबी सुफ़यान को मुल्के शाम की फ़िक्र थी अगर उस ज़माने के पुरआशोब ज़माने पर ग़ौर किया जाए तो मालूम हो जाएगा कि जनाब अमीरुलमोमिनीन[अ०] की कुल चार साला ज़ाहिरी ख़िलाफ़त का ज़माना सिर्फ़ इस फ़ितने और फ़साद के ख़त्म करने के लिए काफ़ी नहीं था।

जनाब अमीरुलमोमिनीन[अ०] ने ज़ाहिरी ख़िलाफ़त क्योंकर कुबूल की

जब इस्लाम का तीसरा शख़्सी दौर ख़त्म हुआ तो अब फिर लोगों के दिलों में आज़ादी और हुर्रियत की चिंगारी जलने लगी और तमाम अहले शूरा ने इत्तफ़ाक़ किया कि, अब इस्लाम में हज़रत अली[अ०] के सिवा कोई ख़िलाफ़त का मुस्तहक़ नहीं लिहाज़ा लोगों ने आपको मजबूर करना शुरु किया और आपने इनकार पर इनकार किये यहाँ तक कि लोग आपके क़त्ल पर आमादा हो गए और ऐसी भेड़या धसां हुई कि जिसकी तस्वीरकशी ख़ुद आप ने अपने मशहूर ख़ुतबे ख़ुतब-ए-शक़शक़िया में की है, फ़रमाते हैं:

"मुझे छोड़ दो, और (इस ख़िलाफ़त के लिए) मेरे अलावा कोई और ढूँढ लो। हमारे सामने एक ऐसा मामला है जिसके कई रुख़ और कई रंग हैं। जिसे न दिल बर्दाश्त कर सकते और न अक़्लें मान सकती हैं।" (ख़ुतबा न०-9)

इन फ़िक़रों से मालूम होता है कि हज़रत ज़माने की नासाज़गारी और माहौल की पुर आशोबी, शोरिशों की कसरत और बग़ावतों की ज़ियादती महसूस कर रहे थे, लेकिन आख़िर में इक़्तेज़ाए माहौल से बज़ाहिर मजबूर होकर आप ने ख़िलाफ़ते ज़ाहिरी क़ुबूल कर ली, लेकिन अगर उस वक़्त आप क़ुबूल न करते तो पहले तो लोग क़त्ल पर आमादा थे और दूसरे दुनिया को यह कहना का मौक़ा मिल जाता कि हज़रत अली[अ०] अपने में ख़लीफ़ा होने की सलाहियत ही नहीं पाते थे वरना ख़िलाफ़त क़बूल न कर लेते।

मुख़ालिफ़ लोगों के प्रोपगण्डे

अमीरुलमोमिनीन[अ०] को ज़ाहिरी ख़िलाफ़त मिलते ही इराक़ और शाम की मुख़ालिफ़तों ने एक के बाद एक घेर लिया और हफ़्ते दो हफ़्ते के बाद ही से इराक़ की बग़ावतों के दरवाज़े खुल गए इमारते कूफ़ा और बसरा न मिलने की वजह से तलहा और ज़ुबैर मदीने से उठकर मक्के पहुँचे उनका मक्के पहुँचना था कि कूफ़ा, बसरा और यमन में साज़िशें शुरु हो गईं अब्दुल्लाह ने इब्ने आमिर, तलहा इब्ने अब्दुल्लाह, ज़ुबैर इब्ने अव्वाम, आएशा बिन्ते अबीबक्र, अब्दुल्लाह मख़ज़ूमी, सईद इब्नुल आस, मुग़ीरा इब्ने शोबा, मरवानुल हकम, यह सब के सब एक बार ख़ुदमुख़्तार हो गए और इन लोगों ने तीस हज़ार का गिरोह एक माह के अन्दर तैयार कर लिया। अमीरुलमोमिनीन[अ०] ने यह ख़बर पाकर ख़ामोश रह जाना अपनी अक़्लमन्दी के ख़िलाफ़ समझा, आप भी एक जमाअत के साथ दिफ़ाअ़ (बचाव) पर तैयार हो गए। आपकी ग़रज़ इन ख़ाना जंगियों से यह न थी मुसलमान मारे जाएं बल्कि सिर्फ़ उनको समझाना मक़सद था। आपकी नियत यह कभी न थी कि आपस में एक दूसरे के गिरेबान पकड़े जाएं। यही वजह थी कि आपने पहले ख़ुद ख़त लिख-लिख कर इनको समझाना और राह रास्त

(बक़िया .... पेज 11 पर)

शबे शहादत

सैय्यिदुल उलमा के ख़ुतबे (3)

सय्यदुल उलमा ताबा सराह की यह तक़रीर ऑल इण्डिया रेडियो स्टेशन लखनऊ से दस मुहर्रम 1362[हि०] में प्रसारित हुई।

रात अन्धेरी होती है मगर इन्सानियत की आँखों में जैसा अन्धेरा दसवीं मुहर्रम की रात था वैसा कभी नहीं हुआ, जब कर्बला में नाम के मुसलमान पैग़म्बरे इस्लाम[स०] का घर उजाड़ने की तैयारियाँ कर रहे थे।

शायद कोई मेरी लफ़्ज़ों का मज़ाक़ उड़ाए यह सोच कर कि 72 भूखे प्यासे लोगों से 30 हज़ार की फौज को लड़ने के लिए तैयारी की क्या ज़रूरत है? मगर नहीं ऐसा नहीं है। आपको मालूम होगा कि इससे पहले जब कूफ़ा के लोगों के बहुत से ख़त इमाम हुसैन[अ०] के पास पहुँचे और इसरार हद से बढ़ा तो आप ने अपने चचाज़ाद भाई को जिनका नाम मुस्लिम था अपना नुमाइन्दा बनाकर कूफ़े भेज दिया जिनके मुक़ाबले के लिए यज़ीद ने इब्ने ज़ियाद को ख़ास तौर पर कूफ़े का गवर्नर बनाया। इस वाक़िए की तफ़सीर मन्ज़ूर नहीं है मगर तारीख़ का यह वाक़िआ यादगार है कि जिस वक़्त एक अकेले मुस्लिम की गिरफ़्तारी के लिए इब्ने ज़ियाद ने थोड़ी सी फ़ौज भेजी तो पहली बार इस फ़ौज ने शिकस्त खाई और मुहम्मद बिन अश्अस ने जो इस फौज का अफ़सर था इब्ने ज़ियाद के पास मदद की दरख़्वास्त भेजी, इस पर इब्ने ज़ियाद ने मज़ाकिया अन्दाज़ में कहलवाया कि एक आदमी के मुक़ाबले में इतने लोग काफ़ी नहीं हुए जो और मदद माँगी है। इब्ने अश्अस ने जवाब दिया कि क्या आप समझते हैं कि आपने मुझे कूफ़े के किसी बनिये या कबड़िये को गिरफ़्तार करने भेजा है? आपको मालूम होना चाहिए कि यह बनी हाशिम की खिंची हुई तलवारों में से एक है फिर जब एक अकेले मुस्लिम ने कूफ़े में अपनी ख़ानदानी बहादरी का लोहा मनवा लिया तो कर्बला में दसवीं मुहर्रम को तो बनी हाशिम के कम से कम सत्तरह अटठारह शेर मौजूद थे जिनमें से कुछ बच्चे सही मगर अब्बास[अ०] और अली अकबर[अ०] ऐसे जवान भी थे और ख़ुद रसूल[स०] की बहादरी के वारिस हुसैन[अ०] मौजूद थे और उनके साथ सौ डेढ़ सौ अरब के मुजाहिद जिनमें से बहुत से लोगों की बहादरी इस्लाम की तारीख़ में नुमायाँ थी इनके मुक़ाबले के लिए शाम की फ़ौज कोई आसान बात नहीं समझती थी और कोई कमज़ोरी और ईमान व यक़ीन से महरूमी ही बड़ी कमज़ोरी थी जो दिल के साथ क़दम को भी डगमगाने के लिए काफ़ी थी और इसका असर देखा जा चुका था मदीने में भी जब वलीद इब्ने उक़बा यज़ीद के इस हुक्म को पूरा करने से आजिज़ रहा कि हुसैन[अ०] से बैअत ले या उनका सर काटकर शाम की तरफ भेजे। और मक्का में जबकि अम्रो इब्ने सईद इब्ने आस की हुकूमत हुसैन[अ०] को अपनी तरफ से गिरफ़्तारी के डर से बचाकर निकालने से न रोक सकी और कूफ़ा में भी जब कि नोमान इब्ने बशीर ने इमाम हुसैन[अ०] के नुमाइन्दे मुस्लिम बिन अक़ील को अटठारह हज़ार कूफ़ियों से बैअत लेने के लिए आज़ाद रखा और पहले ही दिन गिरफ़्तार नहीं किया। यह शायरी नहीं बल्कि तारीख़ी हक़ीक़त है कि यज़ीद को हुसैन[अ०] के मुक़ाबले में अपने मक़सद को पूरा करने के लिए आदमी न मिलते थे तो उन पर भरोसा मुश्किल मालूम होता था।

आज भी हर धर्म का आदमी इस का अन्दाज़ा कर सकता है कि अगर कोई सरकार उनकी किसी इबादतगाह को गिराना किसी मक़सद से ज़रूरी समझती हो तो क्या उस मज़हब के लोग इसके लिए आसानी से तैयार हो

सकते हैं? क्या मस्जिद को ढाने के लिए मुसलमानों पर और मंदिर गिराने के लिए हिन्दुओं पर भरोसा किया जा सकेगा? फिर रसूल[स०] का प्यारा नवासा और मुसलमानों की तलवारें उसका ख़ून बहाएं!

ख़ुद उमरे साद का दिल हुसैन[अ०] की जंग से घबरा रहा था और अगर शिम्र नवीं मुहर्रम को इब्ने ज़ियाद का फ़रमान लेकर आ जाता और उमरे साद को यक़ीनी तौर पर अपने मन्सब और इज़्ज़त बल्कि जान और माल का भी ख़तरा महसूस न होता तो वह अब भी हज़रत इमाम हुसैन[अ०] से मुक़ाबले के लिए तैयार न होता। उसकी फ़ौज में हज़ारों आदमी ऐसे थे जो सिर्फ़ रुपये पैसे की लालच से ही इस बड़े क़दम के लिए तैयार हुए थे मगर वह हुसैन[अ०] की बड़ाई और सच्चाई को इस तरह महसूस कर रहे थे जैसे हम दोपहर को सूरज की रौशनी महसूस करते हैं यक़ीनन इस बड़े तारीख़ी इक़दाम के लिए उस फौज को बड़ी तैयारी की ज़रूरत थी। इधर हज़रत इमाम हुसैन[अ०] अपने मक़सद को पूरा करने की तैयारी कर रहे थे और तैयारी करना न होती तो इस एक रात की मोहलत माँग कर ली न होती मगर यह तैयारी अलग थी, कोई तारीख़ नहीं बतलाती कि इस रात को हज़रत इमाम हुसैन[अ०] ने कुछ हथियार जुटाए हों, लड़ाई के मौक़े के लिए कमीनगाह ढूँढी हो या जंग का नक़्शा तैयार करके अपने साथियों को मुक़ाबले की तरकीबें बताई हों और कुछ हिदायतें दी हों। हरगिज़ नहीं यह भी नहीं मालूम होता कि आपने अपने बाद के लोगों को कुछ वसीयतें की हों। अपने अपने घर वालों को आइन्दा आने वाले इम्तिहानों के लिए तैयार किया हो जो आपके बाद उन्हें बर्दाश्त करना होंगे ऐसा भी नहीं है।

फिर आख़िर आपने इस रात की मोहलत माँग कर क्यों हासिल की? इसका एक जवाब तो वह है जो आपने ख़ुद फ़रमाया था कि मैं चाहता हूँ अपने ख़ालिक़ की इबादत एक रात और कर लूँ, और ऐसा हुआ भी कि रात का बड़ा हिस्सा आपने और आपके साथियों ने तस्बीह व तहलील और इबादत में लगाया और इस रात के सन्नाटे में उन मुजाहिदीन की क़ुर्आन की तिलावत और दुआओं की आवाज़ इस तरह गूँज रही थी जैसे मधुमक्खी के छत्ते से आवाज़ आती है।

इसके अलावा आपने इस रात को जो काम किये उनकी फ़ेहरिस्त यह हैः-

(पहले) अपनी ज़िन्दगी तक औरतों के पर्दे की हिफ़ाज़त। आपको अपने सामने की जमाअत के इस्लाम और शराफ़त की हक़ीक़त मालूम थी। वह जानते थे कि यह ऐसे नीच हैं कि इन्हें अरब की क़ौमी हमिय्यत व ग़ैरत के आम उसूल का भी कोई पास न होगा। कहीं ऐसा न हो कि मुक़ाबले के बीच यह लोग पीछे की तरफ़ से ख़ेमों पर हमला कर दें इस ख़याल से आपने एक गहरी ख़न्दक़ ख़ेमों के पीछे खुदवा दी और उसमें आग जला दी ताकि मुक़ाबला एक ही तरफ से हो और घिर जाने का भी डर न हो और ख़ेमों पर हमले का भी ख़तरा दूर हो।

(दूसरे) बात यह थी कि आपने अपने तमाम साथियों को इकटठा किया और मौक़े की नज़ाकत को सामने रखते हुए आप ख़याल कर सकते हैं कि हज़रत इमाम हुसैन[अ०] कोई जोश दिलाने वाली तक़रीर करेंगे और अपने साथियों को कल के मुक़ाबले में जमे रहने की तलक़ीन करेंगे या इस जंगी कौंसिल में कल की जंग के लिए कुछ तजावीज़ पर ग़ौर करेंगे और सिपाहियों से मश्वरा लेंगे मगर नहीं ऐसा नहीं हुआ। मैं अपनी एक रेडियो की तक़रीर में जो "अस्हाबे हुसैन[अ०]" के उनवान से दो साल पहले प्रकाशित हुई थी इस वाक़ेए को बयान कर चुका हूँ। इस वक़्त मुल्क के पिछले क़रीबी ज़माने के मशहूर अदीब मुन्शी प्रेमचन्द साहब की लफ़्ज़ों में सुनिये वह लिखते हैं:-

> *"जंग का मैदान सज गया है, हज़रत हुसैन[अ०] अपने जाँनिसार साथियों को जंग के मैदान से लौट जाने की तहरीक करते हैं। मुझे इसका फ़ख़्र है कि ख़ुदा-ए-तआला ने मुझे ऐसे सआदतमन्द अज़ीज़ और जाँनिसार दोस्त दिये आपने दोस्ती का हक़ पूरी तरह अदा कर दिया। आपने साबित कर दिया कि हक़ के सामने आप जान और माल की कोई हक़ीक़त नहीं समझते। इस्लाम की तारीख़ में आपका*

नाम हमेशा चमकता रहेगा। मेरा दिल इस ख़याल से टुक्ड़े-टुक्ड़े हो जाता है कि कल मेरी वजह से वह लोग जिन्हें ज़िन्दा रहना चाहिए शहीद हो जाएंगे। मुझे सच्ची ख़ुशी होगी अगर तुम लोग मेरे दिल का यह बोझ हल्का कर दोगे मैं बड़ी ख़ुशी से हर एक को इजाज़त देता हूँ कि उसे फैसला करने का पूरा इख़्तियार है। मेरा किसी पर कोई हक़ नहीं है। मैं तुमसे गुज़ारिश करता हूँ कि इसे क़बूल करो यह देखो मैं शमा बुझाए देता हूँ जिसमें किसी को शर्म न हो मगर— एक फ़र्द भी इस दोस्ताना चाहत से फ़ायदा नहीं उठाता।

बूढ़ा ज़ुहैरे क़ैन जैसा सहाबी कहता है अगर मुझे इसका यक़ीन हो जाए कि मैं आपकी हिमायत में ज़िन्दा जला दिया जाऊँगा और फिर ज़िन्दा होकर जलाया जाऊँगा और यह काम बहत्तर बार होता रहे तो भी मैं आपसे अलग नहीं हो सकता।

यह हक़ का जोश था जिसने कर्बला की जंग को रूहानी अहमियत दे रखी थी।"

यही इस रात की मोहलत लेने का बड़ा मक़सद था कि आप ख़तरे के यक़ीनी होने के बाद अपने साथियों को अपनी तबीअतों के तौल लेने का मौक़ा दे दें, कहीं ऐसा न हो कि कोई ऐसा शख़्स रह जाए जो ख़तरे के हंगामी होने की वजह से मजबूर होकर आपका साथ देने पर तैयार हुआ हो।

आप यह भी चाहते थे कि मुख़ालिफ़ जमाअत की फौज को भी इस एक रात का मौक़ा ग़ौर और फ़िक्र और हक़ और बातिल को पहचानने के लिए दे दें और हुसैन[अ०] की यह कोशिश बेकार नहीं गई बल्कि इसके ज़रिये से हुसैन[अ०] के उसूल को वह बड़ी जीत हासिल हुई जो दुनिया की तारीख़ में यादगार रहेगी।

आपको मालूम है कि जितनी वजहें दिल को बढ़ाने वाली होती हैं वह सब मुख़ालिफ़ फ़ौज में मौजूद थीं ज़्यादती, ताक़त, आराम, हुकूमत की मदद, कामियाबी का यक़ीन, तन्ख़्वाह का दबाव और इनाम की उम्मीदें भी, इसके बरअक्स जितनी वजहें हिम्मत तोड़ने वाली होती हैं वह हुसैन[अ०] की तरफ थीं। बेकसी और बेबसी, तादाद की कमी, सामान का ख़त्म होना, पानी की कमी और इसके बाद तबाही का यक़ीन, फ़िर भी आपने कभी नहीं सुना होगा और कोई ग़लत रिवायत भी ऐसी नहीं है जो बतलाती हो कि कोई एक शख़्स भी इधर का उधर गया हो। यानी ऐसा नहीं हुआ कि हज़रत इमाम हुसैन[अ०] की तरफ़ का कोई शख़्स टूटकर मुख़ालिफ़ की तरफ़ चला गया हो मगर उधर का कम से कम एक और वह भी मामूली सिपाही नहीं बल्कि एक हज़ार सवारों का अफ़सर हुर बिन यज़ीद रियाही उमरे साद की फ़ौज से अलग होकर हज़रत इमाम हुसैन[अ०] की तरफ़ आ गया। यह उसी एक रात की मोहलत का असर था इसमें हुर के दिल और दिमाग़ में जंग होती रही और आख़िर हक़ ने फ़तह पाई और बातिल की हार हुई। यह हुसैनी उसूल की वह बेपनाह जीत थी जो हुसैन[अ०] की ज़िन्दगी में इब्ने ज़ियाद और उसकी सारी फ़ौज को नज़र आई और यह उसी एक रात की मोहलत का नतीजा थी। ■■■

शबे शहादत

यह तक़रीर ऑल इण्डिया रेडियो स्टेशन लखनऊ से दस मुहर्रम 1371[हि०] में प्रसारित हुई।

एक कहावत बहुत ज़बानों पर चढ़ी हुई है कि "कभी के दिन बड़े और कभी की रातें" इसका मतलब चाहे कुछ भी हो मगर यह बिल्कुल सही बात है कि कर्बला की दसवीं मुहर्रम का तारीख़ में जिस तरह दिन बहुत बड़ा है उसी तरह रात भी।

यूँ तो "रात" की लफ़्ज़ के साथ ही दिन के मुक़ाबले में कुछ न कुछ अन्धेरे का ख़याल होता ही है मगर 61[हि०] की दसवीं मुहर्रम की रात की हक़ीक़त यह है कि हर तरफ़ अन्धेरा ही अन्धेरा नज़र आता है।

इसे अन्धेरा कहिये या इन्सानियत के संसार में अन्धेर कि पैग़म्बरे इस्लाम[स०] का कलेमा पढ़ने वाले और मुसलमान होने के दावेदार ख़ुद पैग़म्बरे इस्लाम[स०] के घर को बर्बाद करने की तैयारियाँ कर रहे थे और रसूले ख़ुदा[स०] के उस नवासे को जिसे आप जान व रूह से ज़्यादा अज़ीज़ रखते हों तलवारों, तीरों और नेज़ों का निशाना बनाने को बिल्कुल तुले हुए थे। आज मदीने में अन्धेरा था इसलिए कि रसूले ख़ुदा[स०] के ख़ानदान का आख़री चिराग़ आपकी क़ब्र से अलग होकर आँधियों की ज़द पर था, मक्के में अन्धेरा था, इसलिए कि काबे के वारिस को ज़िन्दगी के आख़िरी हज करने का मौक़ा न मिल सका और वह हज के पूरा होने में एक दिन बाक़ी रहने की हालत में 9 ज़िलहिज्जह को हज का इरादा छोड़ कर अन्जाने सफ़र के लिए मजबूर हो गए थे, कूफ़े में अन्धेरा था, इसलिए कि वह कूफ़ा जो अली[अ०] की राजधानी रह चुका था आज अली के बेटे के क़त्ल के लिए छावनी बना हुआ था और कूफ़े की क़ाबिले जंग आबादी पूरी कर्बला की तरफ़ उंडेल दी गई थी जिसकी वजह से एक हुसैन[अ०] और उनके बहत्तर साथियों के मुक़ाबले के लिए कम से कम तीस हज़ार की फ़ौज इकटठा हो गई थी। शाम के अन्धेरे को तो पूछिये ही नहीं कि रसूले ख़ुदा[स०] के तख़्ते ख़िलाफ़त पर आज उनके बुज़ुरगों दुश्मनों में से एक दुश्मन का क़ब्ज़ा था जो खुलेआम शराब पीता, नमाज़ छोड़ता और जिन्सी ताल्लुक़ात में महरम और ना महरम का फ़र्क़ भी नहीं रखता था। यही तो वह नाक़ाबिले बर्दाश्त सूरतेहाल थी जिसके मुक़ाबले में रसूल[स०] की शरीअत की हिफ़ाज़त करने वाले हुसैन[अ०] ने अपनी जान, माल, औलाद, ज़ाहिरी इज़्ज़त और हर क़ाबिले लेहाज़ चीज़ को क़ुबानी के लिए पेश कर दिया और यह तय कर लिया था कि सब कुछ जाए मगर मैं यज़ीद को अपने नाना पैग़म्बरे इस्लाम[स०] का सही जानशीन क़बूल नहीं कर सकता।

कर्बला में हर तरफ़ अन्धेरा ही अन्धेरा था अगरचे दसवीं को चाँद निकलता है मगर अरब के गर्द व ग़ुबार से भरे रेगिस्तान का चाँद भी अन्धेरे की एक नक़ाब अपने चेहरे पर डाल कर निकलता है। जब चाँद का यह आलम हो तो तारों का पूछना ही क्या। शाम की फ़ौज के दिलो दिमाग़ पर अन्धेरा छाया हुआ था इसलिए कि वह जान बूझ कर पैग़म्बरे ख़ुदा[स०] के बेगुनाह फ़रज़न्द को क़त्ल करने जा रहे थे और हुसैनी जमाअत में माँओं, बहनों और बेटियों की आँखों में दुनिया अन्धेरी थी कि उनके बेटे, बाप और भाई बस एक इशारे के मेहमान थे। बच्चों की आँखों के सामने प्यास की शिद्दत से धुआँ छाया हुआ था और रात के सन्नाटे में नहरे फ़ुरात के बहने की आवाज़, जो ऐसा महसूस होता था कि बहुत क़रीब से आ रही है उनकी प्यास और बढ़ा रही थी हालांकि वह बहुत क़रीब होने के बाद भी उनसे बहुत दूर थी क्योंकि आज पूरे दो दिन हो चुके थे कि नहर पर फ़ौजों का पहरा लग गया था कि हुसैन[अ०] और उनके छोटे-छोटे बच्चों तक पानी का एक क़तरा भी न पहुँच सके।

इन सभी अन्धेरों में बस अगर कोई चीज़ बड़ी रौशन और चमकने वाली थी तो वह शहीदों का मुस्तक़बिल और हुसैन[अ०] का चेहरा जो इस तमाम ज़ाहिरी ग़म व हसरत व अफ़सोस की भीड़ में भी मुतमइन नज़र आ रहा था बल्कि जिसकी ख़ास सिफ़त यह थी कि जितना वक़्त सख़्त होता जाता था उतना हुसैन[अ०] का चेहरा और चमकता जाता था।

यह ज़िन्दगी की रात हुसैन[अ०] ने माँग कर बड़ी मुश्किल से हासिल की थी क्योंकि नवीं तारीख़ दोपहर बाद को सुलह की बातचीत का ख़ात्मा हो गया था इब्ने ज़ियाद कूफ़े के हाकिम के उस ख़त से जो कर्बला की दुश्मन फ़ौज के कमाण्डर इब्ने साद के पास आया था कि हुसैन[अ०] से बिल्कुल सुलह की बातचीत न की जाए बल्कि उन्हें मजबूर किया जाए कि या यज़ीद की बैअत करें या लड़ना क़बूल करें। हुसैन[अ०] के नफ़्स की गहराई, ज़मीर के इस्तेह्काम और अमल की मज़बूती को इब्ने साद ख़ूब जानता था। इस लिए ख़त को देखते ही उसने कह दिया कि ''ख़ुदा की क़सम हुसैन[अ०] बैअत तो नहीं करेंगे। यक़ीनन उनके बाप का दिल उनके सीने के अन्दर है।'' इससे यह भी ज़ाहिर है कि यज़ीद की बैअत ख़ुद यज़ीदी फ़ौज के कमाण्डर की निगाह में भी ऐसी नाक़ाबिले

बर्दाश्त चीज़ थी जिसे हुसैन[अ०] को कभी पसन्द नहीं करना चाहिए। अब यह उसके ज़मीर की कमज़ोरी थी कि हुसैन[अ०] को बेगुनाह समझने के बावजूद इनाम और हुकूमत की लालच में फ़िर भी हुसैन[अ०] से जंग करने के लिए तैयार हो गया।

उसने फ़ौरन हुक्म दे दिया जिस पर दुश्मन की फ़ौज ने हुसैनी जमाअत पर यलग़ार कर दी। हज़रत इमाम हुसैन[अ०] ने अपने भाई अबुलफ़ज़लिल अब्बास को भेज कर मालूम किया कि इस अचानक हमले की क्या वजह है बताया गया कि अमीर इब्ने ज़ियाद का हुक्म आया है कि या हुसैन[अ०] बैअत करें या क़तई तौर पर जंग की जाए। यह मालूम होने के बाद हज़रत इमाम हुसैन[अ०] ने एक रात की मोहलत माँगी।

यह मोहलत इसलिए न थी कि यज़ीद की बैअत के मसले पर ग़ौर किया जाए क्योंकि यह तो पहले ही से तय बात थी कि यज़ीद की बैअत मुमकिन नहीं बल्कि इस रात की मोहलत लेने से आख़िरी बार अल्लाह की इबादत के अदा करने के अलावा यह मक़सद था कि साथियों को इसका मौक़ा दे दें कि जिसका दिल चाहे आपके साथ रहे और जिसका दिल चाहे वह चला जाए।

दुनिया की तारीख़ में इमाम हुसैन[अ०] के इस किरदार का जवाब मिलना बहुत मुश्किल है। आम तौर पर सख़्त और नागवार माहौल में इन्सान अपने साथियों की तादाद बढ़ाने की कोशिश करता है ख़ासकर एक मज़हबी रहनुमा की हैसियत से बहुत आसान था कि इमाम[अ०] निहायत हौलनाक और असरदार अलफ़ाज़ में आख़ेरत के अज़ाब से डराकर अपनी जमाअत को अपने साथ रहने पर तैयार करते जो बेशक सही भी होता मगर यहाँ यह सूरत इख़्तियार नहीं की गई।

हज़रत इमाम हुसैन[अ०] ने इस रात अपने साथियों को ख़ास तौर पर इकटठा करके जो ख़ुतबा पढ़ा वह तारीख की सभी किताबों में बिलकुल तक़रीबन एक जैसा है। उसमें बग़ैर ख़तीबाना जोशो ख़रोश के बिल्कुल सादा अलफ़ाज़ में यह कहा गया था कि देखो! कल हमारा और इस जमाअत का फ़ैसला करने वाला दिन है, उन्हें मुझसे मतलब है और मेरे सिवा किसी से उन्हें सरोकार नहीं है इसलिए तुम लोग मेरे साथ इस ख़तरे में क्यों पड़े हो, यह रात का पर्दा पड़ा हुआ है, रास्ते खुले हुए हैं, इस पर्द-ए-शब में मुझ से रुख़सत होकर चले जाओ।

आपने मज़हबी पाबन्दियों को सामने रखते हुए यह भी फ़रमा दिया कि मैं अपनी बैअत की ज़िम्मेदारी तुम पर से हटाए लेता हूँ। इसका मतलब यह है कि आपने उन्हें आख़िरत के बारे में इत्मिनान दिलाया कि अगर मेरी इजाज़त से फ़ायदा उठाकर तुम जाना चाहो तो तुम्हें आख़िरत की सज़ा का भी डर न करना चाहिए।

आम तौर से मज़हबी लोगों पर यह इल्ज़ाम लगाया जाता है कि वह इबादतों और आमाल में जन्नत और जन्नत की हूरों के वादे और जहन्नम के ख़ौफ़ का लेहाज़ करके किरदार की बेलौसी को बाक़ी नहीं रखते और उसमें नफ़्सानी चाहतों की शिरकत हो जाती है। हुसैन[अ०] कर्बला के जेहाद में अपने साथियों में से हर एक के अमल को इस बुलन्दी के मेयार पर देखना चाहते थे जहाँ सिवाए सच्चाई, सिवाए लिल्लाहियत और सिवाए इन्सानियत के फ़र्ज़ के एहसास के कोई भी जज़्बा या दबाव उन पर असर न डाल रहा हो।

इमाम हुसैन[अ०] ने उन्हें जाने की खुली हुई इजाज़त दे दी मगर मजमे में से एक फ़र्द ने भी इस ज़िन्दगी को जो उन्हें "बिन माँगे" मिल रही थी क़बूल नहीं किया बल्कि अपनी ज़िन्दगियाँ हुसैन[अ०] के क़दमों पर डाल दीं। उन्होंने जो जवाब दिये उनमें से हर लफ़्ज़ आसमानों और ज़मीनों से ज़्यादा वज़नी हो गई इसलिए कि उसमें ख़ालिस ज़मीर की आज़ादी, राय की आज़ादी और इरादे की आज़ादी का जौहर काम कर रहा है। किसी ने कहा कि ऐ फ़रज़न्दे रसूल[स०] आपके बाद ज़िन्दगी ख़ुद एक अज़ाब है। किसी ने कहा अभी मेरे हाथ में तलवार और नेज़ा मौजूद है अगर यह हथियार न भी रहें तब भी आपका साथ न छोड़ूँगा। किसी ने कहा अगर क़त्ल किया जाऊँ, मुझे जला दिया जाए, मेरी ख़ाक हवा में उड़ा दी जाए और ज़िन्दा किये जाने के बाद फिर ऐसा हो और यह सत्तर बार हो तब भी यही तमन्ना रहेगी कि फिर जान इन्हीं क़दमों पर निसार हो।

बक़िया........... पेज 13 पर

फ़ुरू-ए-दीन

मौलाना सै0 इब्ने हसन जारचवी साहब क़िब्ला

ज़कात

दौलत के सही और मुनासिब बटवारे का मसला हर मुल्क और हर ज़माने में परेशान करने वाला रहा है। कुछ मज़हब तो ऐसे हैं कि उन्होंने इसके हल करने की तरफ़ ध्यान ही नहीं दिया और कुछ ने सिरे से मिलकियत (जायदाद) को गुनाह कह दिया और और इस तरह बेकारी, मुफ़्तख़ोरी और रहबानियत (दुनिया से अलग हो जाने) का हौसला बढ़ाया। दूसरे मसलों की तरह इस मसले में भी इस्लाम ने बीच का रास्ता चुना है। इसने मेहनत करके जाएज़ तरीक़े पर दौलत कमाने को गुनाह नहीं बताया, हाँ उसको रोक रखने और खुदा के रास्ते में ख़र्च न करने से रोका गया है।

''वह लोग जो सोने चाँदी को जोड़-जोड़ कर रखते हैं और ख़ुदा के रास्ते में ख़र्च नहीं करते उनको दर्दनाक अज़ाब की ख़बर सुना दो।'' (तौबा-34)

''ताना देने वाले और ऐब निकालने वाले का बुरा हो, जो माल को इकटठा करता है और उसको गिन-गिन कर यह ख़याल करता है कि उसका माल उसको हमेशा ज़िन्दा रखेगा, हरगिज़ नहीं।'' (हुमज़ह 1-3)

फ़िर ज़कात का टैक्स लगाकर दौलत को बेकार पड़े रहने और मिल्लते इस्लामिया के काम न आने से रोक दिया। क्योंकि जब हर शख़्स को लाज़मी तौर पर साल में एक ख़ास रक़म अदा करनी पड़ेगी तो वह कोशिश करेगा कि जहाँ तक हो यह रक़म मुनाफ़े से अदा करे और पूँजी को बचाकर रखे। वाज़ेह रहे कि ज़कात उन्हीं चीज़ों पर वाजिब होती है जो बाक़ी रहें और उनमें बढ़ोत्तरी होती हो यानी वह एक ज़माने तक अपनी हालत पर बाक़ी रहें और उनमें पैदावार या बदलाव की बुनियाद पर बढ़ने की सलाहियत मौजूद हो।

ज़कात कहाँ ख़र्च की जाए, क़ुरआने मजीद ने इस तरह बताया हैः-

''सदक़ात (ज़कात) फ़क़ीरों, मिस्कीनों और ज़कात के सिलसिले में काम करने वालों का हक़ है, उन लोगों के लिए जिनका दिल (इस्लाम की तरफ़) लगाना हो, और (उन लोगों के छुटकारे के लिए है) जो ग़ुलामी में हैं या क़र्ज़दार हैं या जिनको तावान (बदला) देना है। (इसके अलावा इसको) ख़ुदा के रास्ते में ख़र्च किया जा सकता है और मुसाफ़िरों की मदद के काम में लाया जा सकता है। यह हिस्से अल्लाह की तरफ़ से तय हैं।

ग़ौर से देखिये तो इन आठों मसारिफ़ में नेकी और ख़ैरात के तमाम हिस्से आ जाते हैं।

(1) **फ़क़ीरों** और

(2) **मिस्कीनों** में वह सब मोहताज और मजबूर लोग शामिल हो जाते हैं जो किसी बीमारी या मजबूरी की वजह से अपनी रोज़ी नहीं कमा सकते।

(3) **आमिलीन** में वह सब लोग आ जाते हैं जो ज़कात के मोहकमे में काम करते हैं।

(4) **मोअल्लिफ़तुल क़ुलूब** के मातहत वह सब मददें आ जाती हैं जो लोगों को इस्लाम की तरफ़ लाने के लिए दी जाएं।

(5) **''फ़िर्रिक़ाब''** से यह मुराद है कि ग़ुलामों और क़र्ज़दारों की गर्दनों को छुटाने के लिए ज़कात से रुपया ख़र्च किया जाए।

(6) **''ग़ारिमीन''** का मतलब यह है कि जिन लोगों ने लड़ने वाले लोग क़बीलों में सुलह कराने के लिए माली ज़मानत कर ली थी उनकी यह ज़मानत ज़कात से अदा की जा सकती है।

(7) **''फ़ी सबीलिल्लाह''** यानी नेकी के जितने काम हैं सब ज़कात के रुपये से सरअन्जाम दिये जा सकते हैं। जैसे जेहाद वग़ैरा

(8) **''वब्निस्सबील''** मुसाफ़िरों की मदद और उनको राहत पहुँचाने का सामान पहुँचाना, रास्तों का ठीक कराना, पुलों और मुसाफ़िर ख़ानों की तामीर।

इस्लाम ज़कात के ज़रिये से मुफ़्त ख़ोरों और काहिलों की हौसला अफ़्ज़ाई करना नहीं चाहता इसलिए उसने फ़क़ीरों और मिस्कीनों की तारीफ़ भी बता दी।

''उन मुफ़्लिसों के लिए है जो अल्लाह के रास्ते में घिर गए हैं और (रोज़ी कमाने के लिए) ज़मीन पर सफ़र

नहीं कर सकते, अन्जान लोग उनके ना माँगने की वजह से उनको बेज़रूरत समझते हैं। तुम उनके चेहरे से पहचानते हो कि वह हाजतमन्द हैं (अगरचे) लोगों से चिमटकर सवाल नहीं करते।

सदक़ात इकटठा करने का तरीक़ा

हज़रत अली[अ०] ने अपने एक गश्ती हुक्म में सदक़ात इकटठा करने का तरीक़ा बयान फ़रमाया हैः-

''जाओ उस अकेले ख़ुदा का डर दिल में लिये जाओ जिसका कोई साझी नहीं है। (देखना) किसी मुसलमान को हरगिज़ न डराना और ऐसे वक़्त उसके पास से न गुज़रना जब वह पसन्द न करता हो। और अल्लाह का जो हक़ उसके माल में हो इससे ज़्यादा न लेना। जब तुम किसी क़बीले के पास जाओ तो उनके घरों से दूर तालाब के पास उतरो, फ़िर सुकून और वक़ार के साथ उनके पास जाओ और सामने खड़े होकर पहले सलाम करो और पूरे सलाम के आदाब बजा लाओ। फ़िर यह कहो कि ऐ ख़ुदा के बन्दों! मुझे ख़ुदा के वली और उसके ख़लीफ़ा ने तुम्हारे पास इसलिए भेजा है कि तुम्हारे मालों में जो कुछ हक़ ख़ुदा का है वह तुम से वसूल कर लूँ। बस अगर हक़ीक़त में तुम्हारे पास अल्लाह का कोई हक़ है तो उसको अल्लाह के वली के पास पहुँचा दो। इस पर अगर कोई यह कहे कि ''नहीं'' तो फ़िर उससे बहस न करो और अगर कहे कि ''हाँ है'' तो उसके साथ जाओ और बिना डराए धमकाए, ज़बरदस्ती और सख़्ती के बिना जो कुछ वह सोने और चाँदी में से दे ले लो। अगर उसके पास जानवर हों और ऊँटनियाँ हो तो उनके गले में बग़ैर उसकी इजाज़त के दाख़िल न हो क्योंकि ज़्यादा हिस्से का मालिक तो आख़िर वही है; और जब (मालिक की इजाज़त से) उसमें दाख़िल भी हो तो इस तरह नहीं जैसे क़ब्ज़ा जमाने वाले और ज़ालिम शख़्स दाख़िल होते हैं, न किसी जानवर को भड़काओ, न डराओ, ग़रज़ उनके साथ कोई ऐसी बात न करो जो मालिक को बुरी मालूम हो; और माल को दो हिस्सों में तक़सीम कर दो और उसको इख़्तियार दे दो (कि जो हिस्सा चाहे ले ले) और जब वह कोई हिस्सा पसन्द कर ले, तो उससे हिस्से के बारे में कुछ बहस न करो। बस बराबर ऐसा ही करते रहो यहाँ तक कि सिर्फ़ इतना माल बाक़ी रह जाए जिससे ख़ुदा का हक़ पूरा होता है। बस इस को ले लो। (बस अगर उसमें कोई ऐसा जानवर आ जाए जिसके देने) मालिक माफ़ी माँगे तो माफ़ कर दो और सारे माल को आपस में मिलाकर इस तरह नई तरह से तक़सीम करो, यहाँ तक कि तुम उसके माल में से अल्लाह का हक़ भी ले लो (और उसे शिकायत का मौक़ा भी न रहे)।

बक़िया............क्या ख़िलाफ़ते अलविया......... पर लाना ज़रूरी समझा जो फ़ायदेमंद साबित न हुआ फिर आपने भरोसेमंद लोगों को सिफ़ारिश के लिए भेजा फ़िर भी कुछ सुनवाइ न हुई इसके बाद बेवास्ता और ग़ैर सरकारी लोग जैसे, क़ैनुक़ाअ़ वग़ैरा आपस में सुलह कराने में लगे मगर नाकाम रहे लेकिन फ़िर भी आपने शुरुआत न की और नौबत यह हो गई कि बसरा में फ़साद हो चुके थे हकीम और उसके बेटे और भाई के क़त्ले आम हो चुके, तमाम क़बील-ए-ख़ज़ाअ़ी तबाह व बर्बाद कर डाले गए, राजधानी और बसरा का बैतुलमाल लुट चुका, उस्मान इब्ने हनीफ़ अन्सारी मौजूदा आमिले बसरा की दुर्गत बन चुकी। उस वक़्त तक आप ख़ामोश रहे, बल्कि जंग के वक़्त भी जब मुस्लिम इब्ने अब्दुल्लाह, हदील इब्ने वरक़-ए-ख़ज़ाअ़ी और उनके भाइयों का ख़ून हो चुका, तो आपने देखा कि यह ख़ामोशी हमारे साथियों की ग़रीब (अज़ीज़) जातों के बर्बाद होने की वजह हो रही है तो अब आप भी बचाव के लिए उठ खड़े हुए, आपने कहीं से इसका मौक़ा न दिया कि लोग यह कह सकें कि अली[अ०] की ख़िलाफ़त के दौर में सैकड़ों मुसलमानों का ख़ून हो गया आपने जंग में मुसलमान देर इतनी कि फ़ौज वाले इतना बेक़रार थे कि जिसकी कोई इन्तेहा नहीं रह गई थी, यहाँ तक कि इन लोगों ने कह दिया कि अल्लाह की पनाह अली[अ०] मौत से डर कर जंग नहीं करते।

इसके बाद फ़िर जमल की मश्हूर लड़ाई हुई जिसके वाक़ेआ़त लिखकर मुझे तूल देना मक़सूद नहीं है, फिर शाम की बग़ावत की शुरुआत हुई और सिफ़्फ़ीन की लड़ाई हुई जिसमें भी हज़रत आगे नहीं बढ़े बल्कि नसीहत व हिदायत का कोई भी मौक़ा नहीं छोड़ा। ख़त पर ख़त लिखे, वफ़्द पर वफ़्द भेजे यहाँ कि आपके भेजे हुए लोग शाम की दरबार से निकाल दिये गए जब यह ख़राब हालात जमहूरियत के मज़बूत निज़ाम को अपनी भरपूर ताक़त से मिटाने के लिए इतने तैयार हो गए और समाजी ज़िन्दगी में हद का बिगाड़ पैदा हो गया, इक़्तेदार पसन्दी की पुरानी जेहालत वाली रस्म पलटने लगी, इस्लाम के क़ानून, इक़्तेदार पसन्दी में मिटने लगे, तो अब आप भी जंग पर तैयार हो गए लेकिन फ़िर भी आप ने बड़े सब्र से काम लिया यहाँ तक कि जंग के मैदान में भी पहल करना गवारा न किया तो लोग कानाफूसी करने लगे, तो आपने अपने एक ख़ुतबे में इरशाद फ़रमाया किः

''वह इस तरह बे तहाशा मेरी तरफ़ लपके जिस तरह पानी पीने के दिन वह ऊँट एक-दूसरे पर टूटते हैं कि जिन्हें उनके चलाने वालों ने पैरों के बन्धन खोल कर छोड़ दिया हो। यहाँ तक कि मुझे यह लगने लगा कि या तो मुझे मार डालेंगे। (ख़ुतबा न०-54)

कामयाबी का मेयार

"तज़्हीब" नगरौरी, लखनऊ

"अलिफ़ लाम मीम" ये कुरआन वह किताब है जिसमें किसी तरह के शक और शुब्हे की गुन्जाइश नहीं है ये साहेबाने तक़्वा (परहेज़गार लोगों) के लिए मुजस्सम हिदायत है जो गैब पर ईमान रखते हैं पाबन्दी से पूरे एहतेमाम के साथ नमाज़ अदा करते हैं और वह उन तमाम बातों पर भी ईमान रखते हैं जिन्हें (ऐ रसूल) हमने आप पर नाज़िल किया है और जो आप से पहले नाज़िल की गयीं हैं। यही लोग अपने परवरदिगार की तरफ से हिदायत के हामिल हैं और फ़लाहयाफ़्ता और कामयाब हैं।"

ऊपर लिखी आयतें कुरआने हकीम के सूरःए बक़रः की मुहकम आयतें हैं ये सूरः कुर्आने हकीम का सबसे बड़ा सूरः है इसमें दो सौ छियासी (286) आयतें हैं लेकिन हमने जिन आयतों का तरजुमा तहरीर किया है वह सूरःए बक़रः की इब्तेदाई आयतें हैं जिन पर ग़ौर और फ़िक्र करने के बाद सही नतीजा निकाल कर उस नतीजे के मुताबिक़ अमल करने वालों की कामयाबी की ज़मानत कुर्आने हकीम ले रहा है।

लेकिन सवाल ये है कि कामयाबी का मेयार जो कुरआने हकीम बता रहा है वही मेयार कामयाबी का मेयार अगर है और यक़ीनन है भी तो क्या हम उस कामयाबी के मेयार पर खरे उतर रहे हैं? क्या हमको कुर्आने मजीद के हर सूरेः हर आयत, हर लफ़्ज़ बल्कि हर हर्फ़ पर मुकम्मल यक़ीन है? कहीं हमको कुर्आने हकीम के किसी फ़रमान में शक और शुब्हः तो नहीं? क्या हम साहेबाने तक़्वा (परहेज़गार लोगों) में से हैं? क्योंकि यह किताब उन्हीं लोगों के लिए हिदायत है जो साहेबाने तक़्वा (परहेज़गार) होंगे। जो ग़ैब पर भी ईमान रखते होंगे। "ईमान बिल ग़ैब" सिर्फ दिल से यक़ीन करने (अक़ीदः रखने) का नाम नहीं है बल्कि अक़ीदे का दिल में यक़ीन और ज़बान से इक़रार करने के साथ-साथ उसी अक़ीदे के मुताबिक़ अमल करने का नाम है। (जिसे शरीअते इमामियः की इस्तेलाह में फ़ुरूए दीन कहते हैं)

मसलन अगर किसी का यह अक़ीदः है कि अल्लाह है और वह दिखाई नहीं देता लेकिन न दिखाई देने के बावजूद अल्लाह कायनात के ज़र्रेः-ज़र्रेः को देख रहा है और हमारी हर-हर नक़लो हरकत को देख रहा बल्कि दिलों के भेदों का जानने वाला है ग़रज़ कि अल्लाह तआला की जितनी भी सिफ़ातें हैं सब पर ईमान हैं तो वह शख़्स ऐसा कोई काम नहीं करेगा जिससे उसका मालिक उससे नाराज़ हो जाये क्योंकि जिससे कामयाबी की सनद अता फरमाने वाला ही नाराज़ हो जाये उसे किस तरह कामयाबी मिल सकती है। और वह किस तरह फ़लाह पाने वालों की लिस्ट में शामिल हो सकता है।?

इसलिए इल्तेमास है कि कुरआने हक़ीम को गले में लटकाने से ज़्यादः उसके एहकामो फ़रामीन को गले से लगाने की तरफ़ हर-हर लम्हा हर-हर क़दम तवज्जो रहे।

आज यह ज़माना है कि माद्दी चीज़ों (दुनिया की चमक-दमक) में खोया हुआ इन्सान कुरआने हक़ीम पढ़ना तो दूर की बात, उसके ग़िलाफ़ पर जमी हुई गर्द तक हटाने के लिए वक़्त नहीं निकाल पाता क्या ऐसे शख़्स को भी मआज़ल्लाह कोई अक़्ल वाला यह कह सकता है कि यह शख़्स फ़लाह याफ़्ता है? हरगिज़ नहीं।

कितने अफसोस का मक़ाम है कि वह कुरआन जो हमारी ज़िन्दगी का दस्तूरुलअमल है, जिसमें कामयाब ज़िन्दगी गुज़ारने के क़ानून बताये गये हैं वह मौत के वक़्त सिर्फ़ मरीज़ को हवा देने के काम में लाया जाता है। या अगर तिलावत की भी जाती है तो सिर्फ इस ग़रज़ से कि सवाब हासिल हो जाये............शायद इसीलिए शायरे रौशन फ़िक्र मुफ़क्किरे इस्लाम अल्लामा इक़बाल (ख़ुदा उनके दरजात बलन्द फरमाये) ने कहा था कि -

"जिसका अमल है बे ग़रज़ उसकी जज़ा कुछ और है।"

और अल्लामा "नज्म" आफ़न्दी[ताबा सराह] ने फरमाया कि -

होशियार तो लेते नहीं कुरआँ से सबक़
बे होश को कुरआँ की हवा देते हैं!

हालाँकि इसी हिन्दुस्तान में भी ऐसे भी कुरआने हकीम पढ़ने वाले मौजूद हैं जो कुर्आन की तिलावत करके उससे अहकामें दीन और अहकामे ज़िन्दगी हासिल करते हैं और उस पर अमल भी करते हैं यक़ीनन ऐसे लोग लायक़े मुबारकबाद हैं लेकिन उनकी ताअदाद बहुत कम है क्योंकि आज इस ज़लील और हक़ीर दुनिया (जो यक़ीनन ख़त्म हो जाने वाली है) में खोये हुए नाम निहाद मुसलमान अपनी कामयाबी का मेयार अपनी ग़लत सोच की वजह से दुनिया के हासिल करने को समझते हैं। और कुर्आन को समझना और उस पर अमल करना वक़्त बरबादी तसव्वुर करते हैं।

लेकिन लिल्लाह होशियार———

ये कुर्आन रसूले करीम[स०] की अमानत है और उनके जानशीनों ने अपने-अपने दौर में इसकी हिफ़ाज़त करके आज तक महफूज़ रखा है और बिहम्दिल्लाह आज भी कुर्आन का एक मुहाफ़िज़ परदे के पीछे मौजूद है कहीं ऐसा न हो कि मिस्ले यज़ीद कोई कुर्आन मजीद पर ईमान रखने का ज़बानी दावा कर रहा हो लेकिन इस ज़बानी दावे के बावजूद अपने आमाल और किरदार से कुरआने मजीद की तकज़ीब कर रहा हो (झुठला रहा हो) और फिर वक़्त का हुसैन[अ०] अपने जद शहीदे कर्बला की तरह अस्रे हाज़िर के यज़ीदों पर तलवार चला दे............

लेहाज़ः कुर्आने हकीम के फ़रमान में गौरो फ़िक्र करके सही नतीजा निकालिए और उस पर उस तरह अमल कीजिए जिस तरह माअसूमीन अलैहिमुस्सलाम ने अमल करके बताया है या जिस तरह असहाबे आइम्मः ने अमल किया है इसी में दुनिया और आख़ेरत की कामयाबी है वरना ईमान और इस्लाम का ज़बानी दावा खोखला साबित होगा।

"सलाम हो उस पर जो हिदायत की पैरवी करे"

बक़िया............ शबे शहादत

राहत और इत्मिनान के मौक़े पर रईसों के दरबार में खुशामदी लोग हद से आगे निकल जाते हैं मगर मुसीबत और बला में ख़तरे के सर पर होने की हालत में एक ग़रीबुल वतन मुसाफ़िर (परदेसी) के सामने जब इस तरह की बातें कही जा रही हों तो उनमें सिवाए सच्चाई और मुहब्बत के हो ही क्या सकता है? और अगर इस वक़्त किसी अन्जाने शख़्स को इन अलफ़ाज़ की सच्चाई में शक महसूस हो तो कुछ ज़्यादा इन्तिज़ार की ज़रूरत न होगी।

इसी रात के गुज़रने के बाद जो दिन आएगा वह कर्बला के तख़्त-ए-ख़ाकी पर बहते हुए ख़ून की तहरीर से इन अलफ़ाज़ के अमल में आने की तारीख़ तैयार करेगा और फिर कुछ घण्टों के बाद इन्हीं बातें करने वालों के कटे हुए सर नेज़ों पर बुलन्द होंगे और उस वक़्त अगरचे उनकी ज़बानें ख़ामोश दिखाई देती हों मगर दिल से सुनने वालों को उनका यह एलान सुनाई देगा कि देखो! जो हमने कहा था वह कर दिखाया। अगर ज़िन्दगी में हुसैन[अ०] के क़दमों पर रहे तो लाशे हमारे ख़ाक के अन्दर हुसैन[अ०] की लाश के क़दमों के पास और सर हमारे नेज़ों पर हुसैन[अ०] के सर के पीछे ही पीछे हैं और इसी की क़दरदानी थी जो हुसैन[अ०] के आख़िरी वारिस इमामे अस्र[अ०] ने उनको मुख़ातब करके आवाज़ दीः-

"मेरे माँ-बाप तुम पर फ़िदा, ऐ मुजाहिदीने कर्बला! तुम भी पाक हुए और वह ज़मीन भी पाक हो गई जिसमें तुम दफ़्न हुए और ख़ुदा की क़सम तुम ने एक बड़ी कामयाबी हासिल की, "काश मैं भी तुम्हारे साथ होता और इस बड़ी कामयाबी में शरीक होता"

हमारे दिल में भी हक़ की मदद का यही जोश होना चाहिए। आइये हम आप मिलकर कहें
"काश— हम सब भी आपके साथ होते और इस बड़ी कामयाबी में शरीक होते" ■■■

बिस्मिही सुब्हानहू

मोमिनीने केराम!

सलामुन अलैइकुम

नूरे हिदायत फाउण्डेशन ने एक बहुत बड़े इल्मी काम का बेड़ा उठाया है यानी क़दीम शिया आलिमों, अदीबों, शायरों की छपी और ग़ैर छपी किताबों की हिफ़ाज़त और उनमें से अहम और ज़रूरी किताबों की छपाई। चुनानचे इस वक़्त बीसियों हज़ार किताबों की फिलमिंग का काम है जिससे छपी और ग़ैर छपी किताबों को सी०डी० पर महफूज़ करके उनका प्रिंट निकाल कर किताब की सूरत में महफूज़ किया जायेगा। इमामबाड़ा गुफ़रानमआब की लाइब्रेरी का काम पूरा होने के बाद हिन्दुस्तान की दूसरी बड़ी और छोटी लाइब्रेरियों में जाकर यही काम अन्जाम दिया जायेगा साथ ही एक बड़ी लाइब्रेरी का क़ायम करना भी इदारे की नज़र में है। इसी तरह मुहर्रम और सफ़र में इमाम हुसैन[अ०] और उनके साथियों के कारनामों से मुताल्लिक़ हिन्दी, उर्दू और अंग्रेज़ी में किताबों और किताबचों को छाप करके शियों में और ख़ास तौर पर दूसरे मज़हब के लोगों में हर साल बांटना है। शुरुआत में कम से कम पचास किताबचे और पाँच किताबें और हर किताब व किताबचा कम से कम दो हज़ार और ज़्यादा से ज़्यादा पाँच हज़ार छापना है मगर इस काम के लिए एक बड़ी रक़म की ज़रूरत है इसलिए आपसे गुज़ारिश है कि अपने मरहूम वालदैन और दूसरे रिश्तेदारों के लिए ज़िलहिज्जह तक कोई न कोई इदारे की चुनी हुई किताब या किताबचा छपवाएं और ज़रूरतभर हासिल करके अपने इलाक़े में बांटे बाक़ी के लिए आप इदारे को इजाज़त दें कि वह दूसरे शहरों, क़सबों और देहातों में मुफ़्त बांटने के लिए भेज दें।

इदारे को मराजेए केराम ख़ासकर आक़ाए सीस्तानी मद्दज़िल्लहू से हर माह पचास हज़ार रुपये सहमे इमाम[अ०] (खुम्स) लेने की इजाज़त हासिल है। इसलिए गुज़ारिश है कि खुम्स या दूसरी शरआी रक़में जैसे सदक़ा, फितरा, रक़मे चर्मे क़ुर्बानी या इमाम ज़ामिन वग़ैरा फाउण्डेशन को मनीआर्डर या ड्राफ़्ट की सूरत में Noorehidayat Foundation Lucknow के नाम भेजें ताकि यह अहम काम ज़्यादा से ज़्यादा और जल्दी से जल्दी अन्जाम पा सके।

मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जाएसी
नूरे हिदायत फाउण्डेशन, लखनऊ
इमामबाड़ा गुफ़रानमॉब, चौक, लखनऊ

फोनः 0522-2252230
मोबाइलः 09335276180

मुख्य समाचार

उर्दू ज़बान को हाईस्कूल तक अनिवार्य किया जाए:

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद

13 अक्टूबर 2008 दोशम्बे के दिन मुख्यमंत्री मायावती के ज़रिये "हिन्दुस्तान में मुस्लिम समाज के मसाएल और उनके हल" के उनवान से सिटी माण्टेसरी स्कूल स्थित कानपुर रोड, लखनऊ में अज़ीम कान्फ्रेंस हुई। कान्फ्रेंस में क़ौमी मसाएल को सामने रखते हुए मुफ़क्किरे इस्लाम मौलाना डा० सैय्यद कल्बे सादिक़ साहब क़िब्ला और क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद साहब क़िब्ला ने शिरकत करके मुसलमानों के मुख़्तलिफ़ मसाएल के हल के सिलसिले में बातचीत की, गुफ़्तगू की शुरुआत क़ाएदे मिल्लत ने इस तरह की कि चूँकि अब तक सियासी लीडर उनसे सिर्फ़ वादे करते आए हैं और वादे पूरे करने के नाम पर मुसलमानों के साथ सिर्फ़ धोखे हुए लेकिन चूँकि इस बार मुख्यमंत्री मायावती ने इस दावे के साथ वादे किये हैं कि हम जो कहते हैं वह करते भी हैं बस इस जुमले ने मुझे क़ौमी फ़ायदों को सामने रखते हुए यहाँ आने पर मजबूर कर दिया।

क़ाएदे मिल्लत ने हुकूमत को मुसलमानों ख़ास कर शिया फ़िरक़े के मसाएल से आगाह करने और उनके हल कराने के लिए मुख्यमंत्री मायावती को एक मेमोरेण्डम भी दिया जिसमें नीचे दिये गये मुतालबे किये गयेः-

(1) शिया फ़िरक़े में आज़ादी के बाद तालीमी गिरावट को ध्यान में रखते हुए ख़ास रिआयत दी जाए (2) शिया फ़िरक़े के नुमाइन्दे को प्रशासन और हुकूमत में शामिल किया जाए (3) दहशतगर्दी के मामलों में एक उच्च स्तरीय ग़ैर सरकारी कमेटी के ज़रिये जाँच होनी चाहिए (4) शिया-सुन्नी वक़्फ़ बोर्डों को ज़रूरत के मुताबिक़ वार्षिक सहायता तत्काल जारी करवाई जाए (5) हुसैनाबाद ट्रस्ट को सरकारी क़ब्ज़े से आज़ाद करा के शिया वक़्फ़ बोर्ड के ज़रिये चलाया जाए (6) शिया मदरसों की संख्या ग्रांट मदरसों में बहुत कम है इसलिए इसको बढ़ाया जाए (7) उर्दू ज़बान को तालीमी इदारों में हाईस्कूल तक अनिवार्य किया जाए (8) मुअल्लिमे उर्दू जामिआ उर्दू अलीगढ़ के सनदयाफ़्ता लोगों को नौकरी दी जाए (9) लखनऊ में शियों की तीन मस्जिदों को विवादित बनाकर कुर्क किया गया है इन मस्जिदों को ख़ुदा की इबादत करने वालों के लिए आज़ाद किया जाए (10) लखनऊ में शिया-सुन्नी फ़सादों के दौरान बेक़सूर मुसलमानों पर चल रहे मुक़द्दमों को वापस लिया जाए (11) शिया-सुन्नी मुआहेदे के तहत सिर्फ़ 9 जुलूसों को निकालने के अनुमति मिली है सरकारी रिकार्ड में दर्ज और दूसरे जुलूसों जिसमें शाही ज़रीह का जुलूस भी शामिल है को निकालने की अनुमति दी जाए।

सफ़वतुल उलमा मौलाना सय्यद कल्बे आबिद साहब की याद में अज़ीम मजालिस

अलमबरदारे इत्तेहादे बैनुल मुस्लिमीन सफ़वतुल उलमा मौलाना सै० कल्बे आबिद नक़वी रहमतमॉब ताबा सराह की याद में 11-12 अक्टूबर मुताबिक़ 10-11 शव्वाल 1429हि० सनीचर व इतवार को इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमॉब चौक लखनऊ में बाइस्वें दौर की अज़ीम मजालिस बरपा हुईं। जिसमें पहले दिन की मजलिसों को मौलाना सफ़दर हुसैन ज़ैदी साहब जौनपुरी, तनवीर रज़ा विक्टर साहब मुज़फ़्फ़रपुर बिहार, मौलाना मुहम्मद हुज्जत साहब फ़ैज़ाबाद, मौलाना मुम्ताज़ अली साहब दिल्ली, मौलाना सै० अबुलक़ासिम साहब इलाहाबाद, डाक्टर मौलाना सै० रिज़वान हैदर साहब इलाहाबाद और मौलाना शमीमुल हसन रिज़वी साहब बनारस सदर तनज़ीमुल मकातिब ने ख़िताब फ़रमायीं और दूसरे दिन की मजलिसों को मौलाना वसी हसन ख़ाँ साहब यके अज़ मुन्तज़िमीने जामिअतुज़्ज़हरा लखनऊ, मौलाना सै० समीउल हसन वसीम जायसी साहब देहली, मौलाना मज़ाहिर अली सेथली साहब, मौलाना महमूदुल हसन ख़ान साहब जौनपुर सरपरस्त मजलिसे उलमा-ए-हिन्द, मौलाना उरूजुल हसन मीसम साहब और आख़िरी मजलिस को मौलाना सै० सफ़ी हैदर साहब सिक्रेट्री तनज़ीमुल मकातिब ने ख़िताब फ़रमाया।

अमरीका इराक़ में बदअमनी फैलाना चाहता है:

डा० अहमदी नेजाद

इस्लामी जमहूरी ईरान के राष्ट्रपति जनाब अहमदी नेजाद ने कहा है कि अमरीका इराक़ में कशीदगी और बदअमनी फ़ैलाना चाहता है। राष्ट्रपति अहमदी नेजाद ने कहा कि इन हालात को देखते हुए इराक़ी गिरोहों को चाहिए कि वह अपनी सफ़ों में इत्तेहाद को बरक़रार रखें। राष्ट्रपति अहमदी नेजाद ने तेहरान में इराक के कुर्दिस्तान की इन्तिज़ामिया के ज़िम्मेदार मसऊद बारज़ानी से मुलाक़ात में कहा कि अमरीकी हुकूमत ने साबित कर दिया है कि वह किसी मुआहेदे की पाबन्द नहीं है। और अगर उसके फ़ायदों में ज़रूरत होगी तो वह अपने दोस्तों को भी क़ुर्बान कर देती है। राष्ट्रपति ने कहा कि अमरीका की नज़र में शिया सुन्नी और कुर्द का कोई फ़र्क़ नहीं है बल्कि उसका मक़सद है कि यह लोग एक ताक़त बन के सामने न आ सकें। ताकि वह अपनी लूट-खसोट जारी रख सके। जनाब अहमदी नेजाद ने कहा कि इराक़ी गिरोह इत्तेहाद और एकता से अपने मुल्क में अमन व अमान क़ायम करके ग़ैरों के घुसने का रास्ता बन्द कर सकते हैं और इस सिलसिले में वह अपने मुल्क के बुनियादी क़ानून को सामने रख सकते हैं। उन्होंने कहा कि अगर इराक़ी गिरोह एक हों तो बड़ी से बड़ी मुश्किल भी इस मुल्क को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकती।

अहमदीन नेजाद ने कहा कि इस्लामी जमहूरी ईरान, इराक़ की सलामती को बहुत अहमियत देता है। और दोनों मुल्कों की तहज़ीबों के एक होने की वजह से इराक़ी अवाम के साथ है और आलमी इदारों में उनके हुक़ूक़ का बचाव करता है।

ख़ानदाने इज्तेहाद पर तहक़ीक़ी काम शुरू

जी०सी० युनिवर्सिटी लाहौर पाकिस्तान से "ख़ानवाद-ए-इज्तेहाद के उर्दू अदब में इल्मी व अदबी ख़िदमात का जाएज़ा" के उनवान से पीएच०डी० के लिए जनाब सै० इमरान हैदर का मौज़ू मन्ज़ूर किया गया है। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में ख़ानदाने इज्तेहाद पर यह इस तरह का पहला इल्मी और तहक़ीक़ी काम है इस सिलसिले में अगर किसी साहब के पास कुछ मवाद ख़ानदाने इज्तेहाद से मुताल्लिक़ मौजूद हो तो बराए मेहरबानी मक़ाला निगार के नीचे दिये गये पते पर पहुँचाने की ज़हमत गवारा फ़रमाएं।

मौसूफ़ का पता
प्रो० सै० इमरान हैदर
7-B, New Shalimar Town,
Gulshan Ravi, Lahore,
Pakistan. Mobile: 0092-3334318858

अल्लामा मानी जाएसी पर रिसर्च

कराची युनिर्सिटी, पाकिस्तान से "अल्लामा सै० कल्बे अहमद मानी जायसी-हयात और कारनामे" के उनवान से पीएच०डी० के लिए जनाब सै० सुहैल अफ़ज़ाल का मौज़ू एक साल पहले मन्ज़ूर किया गया था जो अभी जारी है। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में इस मौज़ू के मुताल्लिक़ जिन लोगों के पास जो कुछ मवाद मौजूद हो तो बराए मेहरबानी मक़ाला निगार के पते पर पहुँचाने की की ज़हमत गवारा फ़रमाएं।

मौसूफ़ का पता
सै० सुहैल अफ़ज़ाल
B-22/606, Indus Mehran Society,
Saudabad Malir Colony,
Karachi-75080, Pakistan.
Mobile: 0092-03442777906

दबिस्ताने ख़ानदाने इज्तेहाद और इस ख़ानदान के फ़ुक़हा, उलमा, शोअ्रा और उदबा वग़ैरहुम की तस्वीरों, सवानेह हयात बल्कि और भी बहुत कुछ मालूमात के लिए—

लाग ऑन करें:

www.al-ijtihaad.com